तर्ज--अब तो है तुमसे

रस भरी रसना,अपने प्रीतम की
जो पिलाती है ,ताम निसबत की

1--गुण रसना क्या कहूं,एक में अनेक है
कहनी में है बहुत, पर रसना एक है
ये सुख वो ही जाने,जिसने सुख लिए

2--गुझ हक के दिल का, मुख बोले पाइये
मीठे हक मीठी रसना, सुख हमेशा होए

3--माशूक प्यारे जिन्हे, वचन प्यारे लागे उन्हें
तन रूह जिनके लगे ,छेद निकसे बाण उन्हें
मुख से ना कुछ बोले, रुह वचन लागे जाये

Nijanand App